कालेधन का पूरा सच

आखिर कालेधन व भ्रष्टाचार के खिलाफ इस आन्दोलन से सरकार इतनी क्यों डर गयी? क्यों लोकतन्त्र की हत्या की गई? क्यों एक संन्यासी की हत्या की घिनौनी साजिश की तथा देशभक्त नागरिकों पर रामलीला मैदान में बर्बरता की? आपके सामने प्रामाणिक तौर पर रखते हैं इस कालेधन का पूरा सच–

1. **कालाधन क्या है और इसके स्त्रोत क्या हैं? –** देश के साथ धोखा व गद्दारी करके बिना मेहनत के जो देश का धन भ्रष्ट लोगों ने लूटा है, वह कालाधन है। अवैध खनन करके, सरकारी विकास योजनाओं के धन की चोरी करके, रिश्वत–खोरी व टैक्स की चोरी करके जो धन देश में तथा विदेश में जमा किया गया वह कालाधन है। कालाधन हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति है इस पर 121 करोड़ भारतीयों का हक है। अपने देश में 89 प्रकार की लगभग 20 हजार लाख करोड़ की तो मात्र भूसम्पदाएं व अन्य राष्ट्रीय सम्पत्तियाँ ही हैं। इनमें से कई सौ लाख करोड़ रुपये का कोयला, लोहा, गैस, पेट्रोल व हीरा आदि तथा इसी प्रकार अन्य राष्ट्रीय सम्पदाओं भूमि, भूसम्पदा, 2जी., 3जी. आदि वैज्ञानिक सम्पदाओं, जंगल, जड़ी–बूटी आदि सब कुछ धरती, आकाश व पाताल आदि की सभी सम्पदाओं को कुछ भ्रष्ट व बेईमान लोगों ने बेच दिया है और इस लूटे हुए देश के धन को देश में तथा विदेश में जमा कर दिया। इस धन पर इन बेईमानों का कोई अधिकार नहीं है। यह देश का धन है।

2. **यह कालाधन कितना है? –** टैक्स जस्टिस नेटवर्क की वैबसाइट पर वर्ष 2010 के दिए गए तथ्यों व आंकड़ों के अनुसार अब विश्व की शीर्ष आर्थिक संस्था आई.एम.एफ. ने भी माना है कि विश्व में कालेधन की मात्रा लगभग 18 ट्रिलियन डॉलर (810 लाख करोड़ रुपये) है तथा इसमें दुनियाँ के सबसे बड़े कालेधन के केन्द्र स्विटजरलैण्ड में जमा कालाधन, साथ ही चीन, ताइवान एवं तेल निर्यातक देशों का कालाधन इस 18 ट्रिलियन डॉलर में सम्मिलित नहीं है, क्योंकि इन देशों में इसका पता लगाने में दिक्कतें हैं। यदि इन सब देशों के कालेधन को भी इसमें सम्मिलित करें तो यह कई गुणा अधिक होगा। जी.आई.एफ के संस्थापक रेमण्ड बेकर के 2009 के सर्वे के अनुसार भारत जैसे विकासशील देशों से ही प्रतिवर्ष 1.6 ट्रिलियन डॉलर (47.7 लाख करोड़ रुपये) क्रॉस बार्डर डर्टी मनी या ब्लैक मनी जाता है। विशेष बात यह है कि इसका विश्वबैंक ने भी समर्थन किया है। यह बहुत ही संगीन मामला है। ग्लोबल फाइनेंशियल इंटेग्रिटी (जी०आई०एफ०), अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई०एम०एफ०), विश्वबैंक (वर्ल्ड–बैंक), टैक्स जस्टिस नेटवर्क तथा ट्रांसपेरेंसी इन्टरनेशनल आदि सभी विश्व की आर्थिक संस्थाओं के अध्ययन, विश्व के प्रमुख अर्थशास्त्रियों का अनुमान तथा भारतीय रिजर्व बैंक के द्वारा छापी गई मुद्रा (नोट) हमारी जी.डी.पी का 15 से 20% हैं, जबकि पूरे विश्व में यह 2 से 3% ही आदर्श माना जाता है। अधिक मुद्रा व बड़ी मुद्रा कालाधन की अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा माध्यम बनती है। उपरोक्त सभी तथ्य व आंकड़े इस बात का पक्का सुबूत या प्रमाण हैं कि भारत का लगभग 400 लाख करोड़ रुपये से भी ज्यादा का कालाधन है। इसमें से अधिकांश धन विदेशी बैंकों स्विटजरलैंड, मॉरीशस, इटली, दुबई, सिंगापुर व लग्जम्बर्ग आदि 100 से अधिक देशों में जमा है तथा कालाधन देश में भी रीयल स्टेट, जमीन, सोना व अन्य कार्यों में लगा है और बड़े नोटों के रूप में कालेधन की समानान्तर अर्थव्यवस्था चल रही है। (स्त्रोत : इंटरनेट पर कोई भी व्यक्ति उपरोक्त संस्थाओं की वैबसाइट पर जाकर सभी तथ्यों व आंकड़ों के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर सकता है।)

3. **विदेशों में जमा कालाधन किसका है तथा इसका उपयोग कौन कर रहे हैं? –** सबसे अधिक कालाधन कुछ भ्रष्ट नेताओं तथा इसके बाद कुछ भ्रष्ट अधिकारियों तथा कुछ बेईमान बड़े उद्योगपतियों के पास यह कालाधन है। विदेशी बैंकों में जमा इस कालेधन का विदेशी ऋण के रूप में विश्व के बड़े देश उपयोग करके विकास तथा विलासिता कर रहे हैं तथा भारत व अन्य देश इस भ्रष्टाचार व कालेधन के कारण गरीबी, भूख, अभाव व अपमान में जी रहे हैं।

कालेधन को विदेशी ऋण के रूप में जिन देशों ने लिया हुआ है उनमें कुछ देशों के नाम इस प्रकार हैं–

नोट– *दुर्भाग्य से हम जिसे कालाधन कहते हैं, वही कालाधन स्विटजरलैण्ड आदि 70 टैक्स हैवन्स देशों के बैंकों में जमा हो जाता है और अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस व इटली आदि में वह कालाधन एक्सट्रनल डैट अथवा फॉरेन इन्वैस्टमैन्ट के रुप में पहुँच जाता है तथा भारत में भी वही कालाधन जब मॉरीशस रूट से आता है तो वही अनैतिक रूप से अर्जित धन अपने देश में भी फॉरेन-इन्वेस्टमैन्ट के रूप में वापस आ रहा है।*

उदाहरण के रूप में अमेरिका-यूरोप आदि के कुछ देशों पर ऋण की स्थिति इस प्रकार है–

विश्व के सबसे अधिक विदेशी कर्ज में डूबे देश	2010 की अन्तिम तिमाही में विदेशी कर्ज की स्थिति		2011 की पहली तिमाही में विदेशी कर्ज की स्थिति		इन देशों द्वारा तीन माह में लिया गया विदेशी कर्ज		इन देशों द्वारा देश के अन्दर से लिया गया कर्ज	
	मिलियन डॉलर	लाख करोड़ रुपये	मिलियन डॉलर	लाख करोड़ रुपये	मिलियन डॉलर	लाख करोड़ रुपये	ट्रिलियन डॉलर	लाख करोड़ रुपये
1. अमेरिका	14456194	650.52	14825308	667.14	369114	16.61	8.62	388.29
2. इंग्लैण्ड	8561756	385.28	9374868	421.87	813112	36.59	1.71	77.11
3. जर्मनी	5208039	234.36	5442082	244.89	234043	10.53	2.60	117.37
4. फ्रान्स	5091260	229.11	5366839	241.51	275579	12.40	2.15	96.90
5. जापान	2588607	116.49	2640936	118.84	52329	2.35	-	-
6. इटली	2427941	109.26	2601722	117.08	173781	7.82	2.42	108.90
7. हॉलैण्ड	2426941	109.12	2547186	114.62	120245	5.41	0.51	22.75
8. स्पेन	2314854	104.17	2456403	110.54	141549	6.37	0.89	39.94
9. ऑयरलैण्ड	2141095	96.35	2382187	107.20	241092	10.85	0.19	8.64
10. लग्ज़मबर्ग	1954729	87.96	2076535	93.44	121806	5.48	0.008	0.38
इन 10 देशों का कुल	47171416	2122.71	49714066	2237.13	2368869	114.42		
11. बेल्जियम	1292068	58.14	1324666	59.61	32598	1.47		
12. स्विड्जरलैण्ड	1291471	58.12	1304378	58.70	12907	.58		
13. आस्ट्रेलिया	1167272	52.53	1225595	55.15	58323	2.62		
14. कनाडा	1097334	49.83	1150009	51.75	52675	2.37		
15. स्वीडन	944292	42.49	1000961	45.04	56669	2.55		
इन 15 देशों का कुल	52963853	2383.37	55719675	2507.39	2582041	124.01		
16 यूरो एरिया	13715140	617.18	14989049	674.51	1273909	57.33		

स्त्रोत : उपरोक्त आंकड़े IMF (इंटरनेशनल मॉनिटरी फण्ड) की अधिकृत वैबसाइट www.imf.org से लिए गए हैं।

इंग्लैण्ड ने पिछले एक वर्ष से अपने कर्ज का ब्योरा देना बन्द कर दिया है (शायद बहुत ज्यादा बढ़ जाने के कारण से) अत: 2009 की पहली व दूसरी तिमाही के आकड़े दिये गये हैं एवं यूरो एरिया (17 देशों का समूह) की भी यही स्थिति है अत: इनके 2010 की दूसरी व तीसरी तिमाही के आंकड़े यहाँ दिये गये हैं।

सोचने की बात यह है कि ये देश दुनियाँ के सबसे सम्पन्न देश माने जाते हैं, और ये ही महाकर्ज में डूबे हुए है और ये कर्ज का पैसा थोड़ा नहीं है। तो आखिर इन्हे यह कर्ज दे कौन रहा है? जबकि विश्व के लगभग सभी देश भी कर्ज में ही डूबे हुऐ हैं तो क्या ये असीम कर्ज चाँद या मंगल से आया है। दुनिया के शीर्ष अर्थशास्त्रियों व संस्थाओं की बात माने तो ये कर्ज का पैसा कालेधन का ही है और पूरी दुनियाँ में जितना भी कालाधन है उसमें आधा तो भारत का ही है। एक और खास बात यह है कि इनमें शीर्ष 10 देश भी तीन महीने में लगभग 115 लाख करोड़ रुपये ओर कर्ज ले लेते हैं। यूरो एरिया भी तीन महीने में 57 लाख करोड़ रुपये से अधिक का कर्ज ले लेता है। दूसरे अन्य देशों का भी कर्ज हर महीने बढ़ ही रहा है। आखिर ये पैसा आ कहाँ से रहा है? क्या आसमान से टपक रहा है? इसकी गहराई में जाने से यह पता चलता है कि ये अधिकांश कालाधन भारत व एशिया के ही कुछ भ्रष्ट लोगों ने अपने देश व देशवासियों के साथ धोखा व गद्दारी करके जमा किया है। यह बात प्रत्येक भारतवासी को बड़ी गम्भीरता से सोचनी होगी कि आखिर ये सभी अमीर देश इतना कर्ज कहाँ से ला रहे हैं? कहीं यह हमारे खून पसीने की गाढ़ी कमाई का पैसा तो नहीं और यदि यह है तो इसको वापस कैसे लाया जाए या यूँ ही इस अन्याय को सहन कर बच्चों सहित भूखे मर जाएँ?

उपरोक्त आंकडों से स्पष्ट है कि विश्व के 15 देशों ने वर्ष 2011 के पहले तीन महीने की अवधि में 124 लाख करोड़ का नया विदेशी कर्ज लिया है। इस प्रकार ये देश एक वर्ष की अवधि में लगभग 500 लाख करोड़ का नया विदेशी कर्ज ले लेते हैं। विश्व के शीर्ष अर्थशास्त्री भी इस तथ्य को प्रमाणित करते है कि अमेरिका जैसे विकसित देशो द्वारा लिया गया विदेशी कर्ज वास्तव में भारत जैसे प्राकृतिक संसाधन संपन्न देशों का ही धन है जो काले धन के रूप में विदेशी कर्ज के तौर पर देश से बाहर चला गया है। यह काला धन स्थायी रूप से किसी एक देश में नहीं ठहरता है बल्कि अगले नए देश में गतिशील रहता है। भारत का स्विटजरलैंड के बैंकों में जमा काला धन अब दुबई, सिंगापुर व मॉरीशस आदि देशों में जा रहा है। यह भी कम रोचक बात नहीं है कि कुल मिलाकर विश्व के सभी देशों की जी०डी०पी० (सकल घरेलू उत्पाद) का जितना आकार है लगभग उतना ही विश्व के सभी देशों पर विदेशी ऋण है। वर्तमान में विश्व के सभी देशों की जी०डी०पी० लगभग 62 ट्रिलियन डॉलर की है जबकि विश्व के सभी देशों पर कुल मिलाकर लगभग इतना ही बाहरी या विदेशी ऋण है। इस प्रकार विदेशी ऋण के रूप में लिया गया अधिकांश धन यह कालाधन ही है। सभी देशों को आज धन चाहिए, जब अपने देश के ही विकास के लिए धन की सभी देशों को जरूरत है, फिर विदेशी ऋण के रूप में कोई क्यों किसी दूसरे देश को ऋण के रूप में पैसा देगा? कालाधन जिस देश का है यदि उस देश को मिल जाए तो भारत सहित दुनियाँ में कोई भी देश गरीब नहीं रहेगा। कालाधन व भ्रष्टाचार यही पूरी दुनियाँ की सबसे बड़ी दो समस्याएँ हैं?

लगभग इस 3 हजार लाख करोड़ रुपये में से भारत का लगभग 400 लाख करोड़ कालाधन होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इससे बड़ी दु:खद घटना, आश्चर्य, अन्याय और क्या होगा कि भारत व एशिया के अन्य देशों के कालेधन से यूरोप के देश विकास व विलासिता करें तथा भारत व एशिया के लोग भूखो मरें! यह कितनी शर्म, आश्चर्य व अन्यायपूर्ण बात है! यह पाप तुरन्त बन्द होना चाहिए। भारत में गरीबी के कारण भूख व कुपोषण से मरने वालों की संख्या–'ग्लोबल हंगर रिपोर्ट' के अनुसार 1 मिनट में 13, एक घण्टे में 883 तथा एक दिन में लगभग 20 हजार है।

आज भी भ्रष्ट व्यवस्था एवं भ्रष्टाचार के बावजूद दुनियाँ के अन्य देशों की तुलना में भारत पर बाहर के देशों का लिया गया ऋण मात्र 0.237 ट्रिलियन डॉलर (10.66 लाख करोड़ रुपये) तथा आन्तरिक ऋण मात्र 0.855 ट्रिलियन डॉलर (38.48 लाख करोड़ रुपये) है। भारत के बाद भ्रष्टाचार व कालेधन की अर्थ-व्यवस्था को मिटाने का अभियान अन्य एशिया के देशों में भी चलेगा तथा भारत व एशिया का उत्थान होगा तथा हम यूरोप व अमेरिका से भी आगे बढ़ जायेंगे।

4. **भारत का यह कालाधन कहाँ जमा है? –** स्विटरजलैंड, दुबई, इटली, बाहामास, सेंटकिट्स, वर्जिन आईलैण्ड व सिंगापुर आदि 70 से ज्यादा देश हैं, जहाँ ये कालाधन जमा है।

5. **विदेशों में ये देश का धन कैसे जाता है? –** बैंकों की गोपनीयता का लाभ उठाकर हवाला, ओवर इन्वायसिंग, अंडर इन्वायसिंग करके तथा भ्रष्टाचारी व्यक्ति खुद स्विटजरलैंड आदि जाकर वहाँ जमा कराते हैं। अब तो भारत में केन्द्र सरकार ने स्विटरजलैंड व इटली आदि के उन बैंकों को भारत मे शाखा खोलने के लिए लाइसेंस दे दिया है जो कालाधन जमा करते हैं, जिससे कि बेईमान लोगों को देश का लूटा हुआ धन विदेशी बैंकों में जमा कराने में कोई परेशानी न हो।

6. **यह कैसे पता चलेगा कि किसका कितना कालाधन किस देश में जमा है तथा यह कैसे वापस आयेगा? –**

   क. सरकार एक कानून बनाकर सभी भारतीयों से सात दिन या एक सुनिश्चित अवधि के अन्दर अपने विदेशी बैंकों में जमा धन या अन्य सम्पत्ति का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करने को कहे। उपरोक्त अवधि में जिनका विवरण प्रस्तुत न हो उनका धन या सम्पत्ति विदेशी बैंकों में पायी जाने पर उसे राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित किया जाए व जिसने उसे जमा करवाया उसे राष्ट्रद्रोह का अपराधी घोषित करे। इसके पश्चात् ही सभी टैक्स हैवन देशों से भारतीयों के जमा धन का विवरण उपलब्ध हो सकेगा। क्योंकि वह राष्ट्रीय सम्पत्ति है और राष्ट्रद्रोह करके जमा की गयी है। और U.N.C.A.C. की अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि के अनुसार सभी देशों को यह जानकारी भारत को उपलब्ध करानी ही होगी। यदि विदेशों में जमा कालेधन को राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित नही किया गया और ऐसे कृत्य को राष्ट्रद्रोह का अपराध नहीं माना तो कालेधन का विवरण टैक्स हैवन देश कभी देगें ही नहीं। क्योंकि स्वीट्जरलैण्ड आदि टैक्स हैवन देश कर चोरी को संज्ञेय अपराध नहीं मानते और जब तक जिस कृत्य को दोनों देशों में गैर कानूनी न माना गया हो तब तक दूसरे देश हमारी कानूनी मदद करने को बाध्य नहीं हैं। राष्ट्रद्रोह को दुनियाँ के सभी देश समान रूप से संज्ञेय अपराध मानते हैं। कालेधन को राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करके तथा विदेशों में कालाधन जमा करने को राष्ट्रद्रोह का अपराध घोषित करके विदेशों में कालाधन जमा करने के खिलाफ राष्ट्रद्रोह का कानून बना करके इन भ्रष्ट लोगों पर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा दायर किया जाए ताकि अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों व कानूनी प्रावधानों (यूनाईटेड नेशन्स कन्वेन्शन अगेन्स्ट करप्शन) के तहत जब भारत स्वीट्जरलैण्ड सहित सभी टैक्स हैवन देशों से कालेधन की जानकारी मांगेगा तो इनको जानकारी देनी ही पड़ेगी और यह कालाधन देश में वापस आयेगा।

ख. जिन देशों में ये कालाधन जमा है उन सभी देशों के दूतावास भारत में हैं। जब भी ये भ्रष्ट लोग उन देशों में जाते हैं तो जाने से पहले उन देशों का इन्हीं दूतावासों से वीजा लेते हैं। इसके साथ-साथ भारत सरकार के भी इमीग्रेशन विभाग को पता होता है कि कौन व्यक्ति किस देश में जा रहा है तथा कहाँ से जाकर आया है। ये पूरा विवरण सरकार के पास है, इस पर तुरन्त कार्यवाही करके सरकार पता लगा सकती है कि कालाधन जमा करने वाले कौन लोग हैं। कुछ लोग स्विटजरलैंड व अन्य टैक्स हेवन देशों में घूमने, नौकरी करने व अपने रिश्तेदारों के पास भी जा सकते है लेकिन कुछ बड़े नेता, बड़े अधिकारी तथा बड़े व्यापारी बार-बार वहाँ पर जाते हैं। इसका मतलब वे ही बेईमान हैं और बार-बार पैसा जमा करवाने के लिए ही जाते हैं।

ग. भारत में रहकर जो लोग विदेशों में अपने खातों का संचालन करते हैं उनका टैक्नीकल इन्वेस्टिगेशन करके अर्थात् इन्टरनेशनल इन्फोरमेशन गेटवेज पर सर्विलेंश (जाँच) के उपकरण लगाकर उनका पता लगाया जा सकता है।

घ. मॉरीशस रूट से देश में आया लगभग 50 लाख करोड़ रुपया इन्हीं भ्रष्ट लोगों का ही है। इसकी पूरी जांच करके मॉरीशस रूट से आये धन को भी राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करने की जरूरत है।

ड़. देश में जमा कालेधन को वापस लाने व अन-अकान्टेड मनी पर रोक लगाने के भी बहुत से उपाय हैं–जैसे बड़े नोट वापस लेना तथा जिनके पास हजारों करोड़ रुपये के बड़े नोट हैं उनका धन स्वत: सरकार के पास आ जायेगा तथा जिन लोगों के पास 1 लाख से 10 लाख रुपये हैं या जिनकी जितनी नौकरी या मेहनत की कमाई है उनको बैंकों से छोटे नोट मिल जायेंगे। इस विषय में विस्तार से चर्चा की जा सकती है तथा भारत स्वाभिमान की दूसरी प्रचार सामग्री में इसकी विस्तार से चर्चा भी की गयी है। भारत में जिन भ्रष्ट लोगों ने सोना व जमीन आदि अन्य कामों में कालेधन का निवेश किया हुआ है यदि सरकार चाहे तो इसका आसानी से पता लगा सकती है। बैंकों आदि के लॉकर्स से सोना तथा तहसीलों पर निष्पक्ष जाँच करके भ्रष्ट लोगों के पास जो अवैध भूमि, भवन इत्यादि है इस सबका पता लगाया जा सकता है।

च. कालेधन का पता लगाने के लिए भ्रष्टाचार में लिप्त रहे व्यक्ति का नार्को टेस्ट भी करवाया जा सकता है। यह अन्तिम विकल्प के रूप में बहुत ही कारगर सिद्ध होगा।

7. **विदेशों में जमा कालेधन को वापस लाने का तथा भ्रष्टाचार के खिलाफ लोकपाल व अन्य कठोर कानून बनाने के साथ ही गलत कानूनों, नीतियों व इस भ्रष्ट व्यवस्था को बदलने का लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली में एक मात्र अधिकार किसके पास है?** – चुनी हुई केन्द्र सरकार या संसद के पास और संसद में सांसद चुनकर भेजने का एकमात्र अधिकार देश की जनता के पास है। अत: इस बार ऐसे सांसद चुनकर भेजो, ऐसी सरकार केन्द्र (दिल्ली) में बनाओ जो कालाधन देश को दिलवाये, भ्रष्टाचार मिटाये व भ्रष्ट व्यवस्थाओं को बदले।

8. **कालेधन के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट का दृष्टिकोण क्या है?** – माननीय सुप्रीम कोर्ट ने वर्तमान केन्द्र सरकार पर आजादी के इतिहास में पहली बार जो ऐतिहासिक व निर्णायक फैसला सुनाते हुये जो टिप्पणियाँ की हैं, उससे सरकार पूरी तरह से नंगी हो चुकी है। माननीय सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि कालाधन राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बहुत बड़ा खतरा है। सरकार कोर्ट के दखल के बाद ही कुछ कार्यवाही करती है सरकार अपने लोकतान्त्रिक व संवैधानिक दायित्वों को गम्भीरता व प्रामाणिकता के साथ नहीं निभा रही है। सरकार की नीयत ठीक नही है। मा० सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी सरकार के मुँह पर बहुत बड़ा तमाचा है। कालेधन ने सरकार का मुँह काला कर दिया है और मा० सुप्रीम कोर्ट बार-बार कह रहा है कि सरकार विदेशों में कालाधन जमा करने वालों के नाम क्यों नहीं बता रही है? सरकार जब संवैधानिक, लोकतान्त्रिक व राजनैतिक दायित्व निभाने में विफल हो गयी है तो मा० सुप्रीम कोर्ट ने स्वयं पहल करके एस०आई०टी० अर्थात कालेधन पर विशेष जाँचदल का गठन किया है। मा० सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय हमारे इस जनहित व राष्ट्रहित के आन्दोलन की आवश्यकता, वैधानिकता व प्रामाणिकता का सबसे बड़ा सुबूत है। मा० सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय दर्शाता है कि हम सही थे और सरकार पहले भी गलत थी तथा आज भी गलत है।

9. **क्या अब तक स्विस बैंकों से कोई देश कालाधन वापस लाया है?** – जब नाईजीरिया विदेशों में जमा अपना 522 मिलियन डॉलर से अधिक धन, पेरू 180 मिलियन डॉलर, फिलीपीन्स 624 मिलियन डॉलर, जाम्बीया 52 मिलियन डॉलर वापस ला सकता है तथा अमेरिका 4000 से अधिक अपने देश के स्विट्जरलैण्ड में कालाधन जमा करने वाले लोगों पर कार्यवाही करके अपने लाखों करोड़ रुपये वापस ला सकता है और इसी तरह जर्मनी, ट्यूनेशिया व पाकिस्तान भी अपना कालाधन विदेशों से ला सकता है तो अब तक भारत एक रुपया भी कालाधन वापस क्यों नहीं लेकर आया?

10. **कालाधन वापस लाने वाली सरकार का दिल्ली में राज कैसे आयेगा?** – यह तभी सम्भव होगा जब सब लोग मिलकर कालाधन

वापिस लाने व भ्रष्टाचार मिटाने के लिए एकजुट होकर वोट करें। इसी को हम कह रहे हैं कि हम सब राष्ट्र-भक्त मिलकर एक राष्ट्रीय वोट बैंक तैयार करेंगे।

11. भारत स्वाभिमान की मुख्य माँगें व मुद्दे क्या हैं?– 1. कालेधन को राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करने का कानून बनवाना व विदेशों में कालाधन जमा करने को राष्ट्रद्रोह का अपराध घोषित करवा के देश का लूटा हुआ 400 लाख करोड़ रुपये देश को दिलवाना। 2. भ्रष्टाचारियों के खिलाफ आजीवन कारावास या मृत्यु दण्ड का कानून बनवाना साथ ही लोकपाल जैसे कठोर कानून बनवाकर भ्रष्टाचार के सभी स्रोतों (अवैध खनन करके राष्ट्रीय सम्पदाओं की लूट, रिश्वतखोरी, टैक्सचोरी व सरकारी विकास योजनाओं का धन लूटना आदि) पर पूर्ण अंकुश लगवाना। 3. अंग्रेजों के समय से चली आ रही पक्षपात व अन्यायपूर्ण गलत नीतियों, कानूनों व भ्रष्ट व्यवस्थाओं का राष्ट्रहित में पूर्ण परिवर्तन करवाना और आर्थिक आजादी के सिद्धान्त पर चलकर सबको आर्थिक व सामाजिक न्याय दिलाना।

12. कालाधन वापस आने से तथा भारत स्वाभिमान आंदोलन के पूरा होने से देश को क्या मिलेगा?

क. 400 लाख करोड़ रुपये कालाधन वापस आने से देश की अर्थव्यवस्था व मुद्रा मजबूत होगी। हमारी सकारात्मक जी०डी०पी० बढ़ेगी। कृषिगत, औद्योगिक व सेवागत विकास होगा। आने वाले 40 से 50 साल तक देशवासियों को टैक्स नहीं देना पड़ेगा, इससे देशवासी धनवान् होंगे तथा गैस, डीजल, पेट्रोल व गाड़ी आदि सभी वस्तुएँ 30 से 50 प्रतिशत सस्ती होंगी। सबको शिक्षा व स्वास्थ्य आदि सेवाएँ मिलेंगी। कोई भी देशवासी बेरोजगार नहीं रहेगा। हम अपनी अर्थशक्ति का सैन्य व परमाणु शक्ति को बढ़ाने में प्रयोग कर देश को सुरक्षा में पूर्ण स्वावलम्बी व शक्तिशाली बना सकेंगे।

ख. भ्रष्टाचार मिटने से देश में रिश्वतखोरी बन्द होगी, पूरा विकास होगा, देश की लगभग 20 हजार लाख करोड़ की भूसम्पदाएँ व अन्य राष्ट्रीय सम्पतियों की लूट नहीं होगी आदि।

ग. भ्रष्ट व्यवस्था के सुधार होने से सबको न्याय मिलेगा। जो नियम कानून, नीतियाँ व व्यवस्थाएँ अंग्रेजों ने हमें लूटने व हमारा शोषण करने के लिए बनाई थी उन सभी नीतियों कानून व व्यवस्थाओं का भारतीय या स्वदेशीकरण होगा। जैसे शिक्षा में भाषा के नाम पर अन्याय व संस्कारों का अभाव, किसान को अकुशल श्रमिक मानकर उसकी उपज के मूल्य निर्धारण में पक्षपात व 1894 के बने भूमि अधिग्रहण कानून के नाम पर शोषण, 1760 के बने काले कानून के आधार पर गोहत्या व शराब के व्यापार को कानूनन वैधता। 1861 के बने पुलिस एक्ट के आधार पर जनता के साथ क्रूरता व अत्याचार आदि, 34735 कानून, जिनके आधार पर न्याय नहीं बल्कि फैसला मिलता है वो भी वर्षों बाद। ये सब व्यवस्था एक षड्यन्त्र के तहत अंग्रेजों ने बनाई थी। इस भ्रष्ट व्यवस्था का राष्ट्रहित में पूर्ण परिवर्तन होगा।

घ. स्वायत्त, सशक्त व निष्पक्ष लोकपाल बनने से संवैधानिक पदों पर बैठे लोग लूट, भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी नहीं कर पायेंगे। भ्रष्टाचार करके लूटे हुए धन की वसूली हो पायेगी, तभी भ्रष्टाचारियों को आजीवन कारावास व फाँसी की सजा होगी। लोक सेवा प्रदाय गारन्टी एक्ट (पब्लिक सर्विस डिलीवरी गारन्टी एक्ट) बनने से एक निर्धारित समय अवधि के भीतर लोगों के काम पूरे होंगे तथा जो अधिकारी लोगों के वैध काम नहीं करेगा, उसको प्रतिदिन 250 से 500 रुपये जुर्माना देना होगा तथा बार-बार गलती करने पर उसे बर्खास्त कर दिया जायेगा। न्यायालयों में अभी तक लगभग 3.5 करोड़ मामले पहले से ही लम्बित पड़े हैं। अतः भ्रष्टाचार के मामलों की तुरन्त सुनवाई के लिए प्रथम चरण में प्रत्येक प्रान्त में तथा केन्द्र में एक-एक स्पेशल फास्ट ट्रैक कोर्ट बनने से एक साल के भीतर कार्यवाही होने से भ्रष्टाचारियों को तुरन्त सजा मिलेगी और भ्रष्टाचार करके अर्जित सम्पत्ति जब्त हो जायेगी।

ड़. व्यवस्था-परिवर्तन – सन् 1894 के बने भूमि-अधिग्रहण कानून के नाम पर किसानों के साथ अन्याय व अत्याचार नहीं होगा। किसान को अकुशल श्रमिक के स्थान पर कुशल श्रमिक का दर्जा मिलेगा और किसानों के लिए न्यूनतम मूल्य निर्धारण नीति के स्थान पर उनकी उपज के लिए लागत मूल्य निर्धारण नीति बनेगी व राष्ट्रीय किसान आय आयोग का गठन होगा। रासायनिक खादें व विषैले कीटनाशकों के स्थान पर जैविक खाद व कीटनाशक (बायो-फर्टिलाईजर व पेस्टीसाईड्स) का प्रयोग होने से गोधन, पशुधन धरती माता का खेत व इंसान का पेट–सब कुछ सुरक्षित होगा। शिक्षा के क्षेत्र में भाषा के नाम पर चल रहा पक्षपात व अन्याय बन्द होगा तथा राष्ट्रभाषा व अन्य भारतीय भाषाओं–गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, ओडिया, पंजाबी, बांग्ला व असमिया आदि भारतीय भाषाओं में मेडिकल कॉलेज, इन्जीनियरिंग कॉलेज तथा कृषि विश्वविद्यालय में पढ़ने का अधिकार मिलने से देश के गरीब, मजदूर, कारीगर, किसान व गाँव के बच्चों को भी डॉक्टर, इन्जीनियर व वैज्ञानिक आदि बनने का अवसर मिलेगा और जर्मनी, जापान, चीन, फ्रांस व रशिया आदि देशों की तरह हमारे देश के लोगों को भी देश की भाषा में विज्ञान व तकनीकी की शिक्षा मिलेगी। अनिवार्य मतदान, स्टेट फंडिंग इलैक्शन व प्रधानमंत्री के चुनाव सीधे जनता के द्वारा होने से लोकतन्त्र,

लूटतन्त्र व भ्रष्टतन्त्र होने से बचेगा साथ ही निष्कलंक, बेदाग व योग्य (नॉन करेप्ट एवं कैपेबल) लोगों का राजनीति में बहुमत होने से राजनीति का शुद्धिकरण व पुनर्जन्म होगा और एक आदर्श राजनैतिक व्यवस्था देश को मिलेगी।

13. **कालाधन वापिस आने से आम इन्सान को क्या मिलेगा?** – हर भारतीय नागरिक को भी अमेरिका व ब्रिटेन आदि ताकतवर देशों के नागरिकों की तरह ही पूरे विश्व में सम्मान मिलेगा, हम अपने भारतीय होने पर गर्व कर सकेंगे और इस कालेधन के उपर सभी देशवासियों का समान अधिकार होगा। इससे सबकी समृद्धि, सबका सम्मान, सबकी उन्नति व सब धनवान होंगे। गरीबी, अशिक्षा व बेरोजगारी आदि सब समस्याओं का समाधान होगा। जिस दिन भारत से भ्रष्टाचार खत्म हो जायेगा तथा देश का लूटा हुआ धन वापस मिल जायेगा उस दिन भारत की अर्थव्यवस्था व मुद्रा इतनी मजबूत होगी कि 1 रुपये की कीमत डॉलर या पौंड के बराबर या उससे अधिक होगी तथा भारत विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक महाशक्ति होगा।

14. **आखिर कालेधन के खिलाफ इस अभियान से स्वामी जी को क्या मिलेगा?** – स्वामी जी ने बार-बार पूरी प्रामाणिकता और गम्भीरता के साथ अपनी इस भीष्म प्रतिज्ञा को दोहराया है कि मैं जीवन में कभी भी चुनाव नहीं लड़ूँगा तथा कोई भी राजनैतिक पद ग्रहण नही करुँगा। सत्ता, सम्पत्ति, सिंहासन के मोह से मुक्त रहकर योगधर्म के साथ राष्ट्रधर्म एवं राष्ट्रहित को सर्वोपरि मान करके स्वामी जी ने यह आंदोलन पूरे नि:स्वार्थ भाव से चलाया। कालाधन वापस आने पर यह धन देश व देशवासियों को मिलेगा न कि स्वामी जी को। देश व दुनियाँ के 100 करोड़ से ज्यादा लोग आज स्वामी जी के प्रति अगाध आस्था, श्रद्धा व विश्वास रखते हैं व उनको भगवान की तरह पूजते हैं। राजनीति आखिर उनको दे ही क्या सकती है? अपने योग-साधना, तप व सेवा से स्वामी जी ने वह पा लिया है जो राजनीति कभी किसी को दे ही नहीं सकती। भ्रष्टाचार व कालेधन के खिलाफ अभियान शुरू करके स्वामी जी ने अपने जीवन की सारी प्रतिष्ठा, यश व सर्वस्व को दांव पर लगाया है और देश व दुनियाँ की अति ताकतवर आसुरी शक्तियों को अपना दुश्मन बनाया है। स्वामी जी अपनी जान हथेली पर रख करके अब तक लगभग 5 लाख किलोमीटर से ज्यादा किलोमीटर की यात्रा कर चुके हैं, जिस दौरान उन्होंने 10 करोड़ से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष तथा 100 करोड़ से ज्यादा लोगों को परोक्ष रूप से योगधर्म से राष्ट्रधर्म के लिए जागृत किया है तथा अब भी बिना 1 दिन भी विश्राम किये वह लगातार 18 से 20 घण्टे नि:स्वार्थ भाव से कार्य कर रहे हैं।

15. **ग्रामोद्योग व स्वदेशी अभियान के पीछे क्या अपना आर्थिक साम्राज्य स्थापित करने की मंशा है?** – ग्रामोद्योग व आदर्श ग्राम निर्माण योजना व स्वदेशी अभियान का लक्ष्य गाँव, गरीब व भारत की दरिद्रता को दूर करना है तथा विदेशी कम्पनियों द्वारा की जा रही आर्थिक लूट को भी रोकना है। गाँव, गरीब व भारत का पैसा भारत में रहने से भारत आर्थिक दृष्टि से शक्तिशाली बनेगा। यदि हम स्वदेशी का उच्च गुणवत्ता युक्त व कम मूल्य के साथ एक आदर्श विकल्प नहीं देंगे तो आखिर इस विदेशी कम्पनियों की इस आर्थिक लूट पर अंकुश कैसे लगेगा? अगर हम अर्थ की बात करें तो हमारे शास्त्रों में कहीं पर भी अर्थ की निंदा नहीं की है, अपितु अनुचित मार्ग से अर्थ संचय का निषेध है हमारे शास्त्रों में तो स्पष्ट कहा है कि **सुखस्य मूलं धर्मः। धर्मस्य मूलम् अर्थः। अर्थस्य मूलं राज्यम्! राज्यस्य मूलमिन्द्रियजयः**। हमारे ग्रामोद्योग व स्वदेशी का विशुद्ध उद्देश्य गाँव को स्वावलम्बी व आत्मनिर्भर बनाना ही है, अपना आर्थिक साम्राज्य स्थापित करना नहीं।

16. **क्या कुछ चन्द लोगों के तप व पुरुषार्थ से देश बच पायेगा?** – जब भ्रष्टाचार करके कालाधन जमा करने वाले कुछ चन्द लोग देश को बर्बाद करके बेच सकते हैं। तो चन्द लोग तप, पुरुषार्थ व सेवा करके, संगठित होकर देश को बचा क्यों नहीं सकते? यही हमारी संस्कृति भी कहती है–**'भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे। ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु'**, यही हमारे पूर्वजों का आदर्श व वेदों का आदेश है।

17. **आंदोलन के दौरान बार-बार यह चिट्ठी की बात कह करके आंदोलन के बारे में भ्रम फैलाया गया आखिर चिट्ठी में क्या था?** – माननीय प्रधानमंत्री जी को लिखी गई दोनों चिट्ठीयाँ जो भारत स्वाभिमान की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं, उनमें हमारी कालाधन, भ्रष्टाचार व व्यवस्था परिवर्तन की सारी मांगे व मुद्दे स्पष्ट रूप से लिखे हुये हैं। श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी की ओर से जो चिट्ठी लिखी गई, उसमें हमने स्पष्ट रूप से यही लिखा था कि यदि सरकार हमारी पूरी मांगे मान लेती है तो हम अनशन समाप्त कर देंगे, इसके अलावा उस चिट्ठी में कुछ भी नहीं था।

18. **क्या कालेधन के खिलाफ आवाज उठाना गुनाह या अपराध है?** – 4 जून की रात तक बाबा रामदेव एक राष्ट्रभक्त, योगी, संन्यासी थे और अचानक 4 जून की ही रात को एक बजे स्वामी रामदेव ठग कैसे हो जाते हैं? वे अस्थिरता, अशान्ति, अराजकता साम्प्रदायिकता फैलाने वाले गुनाहगार कैसे हो जाते हैं? क्या इसलिए कि वे कालाधन व भ्रष्टाचार को मिटाना चाहते हैं!

आज जो पार्टी केन्द्र में सरकार चला रही है, उसको मात्र 11 से 12 करोड़ा लोगों का ही वोट मिला हुआ है। और ये वोट भी उसने देश के लोगों के साथ धोखा करके, विकास के नाम पर झूठे सपने दिखाकर, आश्वासन देकर, झूठ बोलकर, शराब व पैसा आदि

बांटकर लिए हैं। हमारे देशभक्त कार्यकर्ता घर-घर व गाँव-गाँव जाकर हकीकत, सच्चाई बतायेंगे कि सत्ता में बैठे यही लोग भ्रष्टाचारी व अत्याचारी हैं तथा कालाधन भी इन्ही का है, इसीलिए इन्होंने देशभक्त भारतीयों, निर्दोष माताओं-बहनों, बच्चों तथा निहत्थे उपवास पर बैठे भूखे लोगों पर असंवैधानिक, अलोकतान्त्रिक व अमानवीय तरीके से क्रूरता, बर्बरता व अत्याचार किए। सभी भारतवासियों की इन भ्रष्ट लोगों से घृणा हो चुकी है।

19. **व्यवस्था परिवर्तन की बड़ी बाधा-जातिवाद व मजहबी उन्माद का समाधान कैसे होगा? –** हम गरीब, अमीर, दलित, बाल्मीकि, वनवासी, आदिवासी, ग्रामवासी, शहरवासी, अगड़े-पिछड़े, सभी जाति, सभी धर्म, पन्थ, सम्प्रदाय एवं मजहब व समाज के सभी वर्गों को समझायेंगे कि हमारी गरीबी, अशिक्षा व बदहाली का कारण हमारी जातियाँ या मजहब नहीं बल्कि इस कालेधन व भ्रष्टाचार के कारण ही हम सबकी ये दुर्दशा हुई है तथा हम हिन्दू, मुसलमान व ईसाई आदि एक दूसरे के लिए खतरा नहीं हैं, हमने एक दूसरे के हक व अधिकार नहीं छीने हैं, अपितु इन भ्रष्टाचारियों ने हम 121 करोड़ भारतवासियों का हक छीना है, इन्होंने हमें गरीब बनाया है। ये देश न लूटते तो आज हिन्दुस्तान में कोई भी गरीब न होता।

अत: आओ! अब हम सब मिलकर इन भ्रष्टाचारियों को सत्ता से बाहर करें और ऐसे लोगों को सरकार के लिए चुनें जो 400 लाख करोड़ रुपये हमें दिलवाएँ तथा भ्रष्टाचार व भ्रष्ट व्यवस्था को खत्म करें। इसी से हम सब सुखी तथा समर्थ बनेंगे व स्वाभिमान से जी सकेंगे।

20. **4 जून के रामलीला मैदान के आंदोलन की दो बड़ी उपलब्धियाँ –** 121 करोड़ लोगों तक कालाधन भ्रष्टाचार व भ्रष्टव्यवस्था के खिलाफ एक संदेश पहुँचा तथा एक बहुत बड़ा वातावरण व जनमत तैयार हुआ है और केन्द्र सरकार के कुकृत्य से उसके प्रति लोगों की घृणा पैदा हो गई। 4 जून की रात को एक बजे कायरता व बर्बरता पूर्ण क्रूर अत्याचार करके सरकार ने अपना चरित्र देश को दिखा दिया और यह प्रमाणित (सिद्ध) कर दिया कि वे भ्रष्टाचारी व अत्याचारी तो हैं ही, साथ ही कालाधन भी इनका ही है, अन्यथा विदेशों में जमा कालेधन को वैधानिक तौर पर राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करने व इसे देश में लाने में इनको आपत्ति क्यों है?

21. **हमारे आंदोलन के विरोधी कौन? –** गाँव, गरीब व भारत विरोधी कालेधन, भ्रष्टाचार व भ्रष्ट व्यवस्था से पोषित होने वाली देशी-विदेशी ताकतें, विदेशी कम्पनियाँ, नशा, दवा एवं हथियार माफिया, विदेशों से संचालित षड्यन्त्रकारी राजनैतिक लोग, विदेशी धन व भ्रष्ट उद्योगपतियों से संचालित कुछ मीडिया हाउस, बिके हुए बुद्धि-जीवी व तथाकथित खानदानी नेता जो इस देश को अपनी जागीर समझते हैं, वे हकीकत में खानदानी लूटेरे व देश के गद्दार हैं। यदि बाद में भी स्वामी जी पर कोई भी आक्रमण होता है या उनकी हत्या का षड्यन्त्र रचा जाता है तो ये ही भ्रष्ट शक्तियाँ जिम्मेदार होंगी।

22. **क्या सचमुच रामलीला मैदान में श्रद्धेय स्वामी जी को मारने की साजिश थी?**
क्या स्वामी जी ने रामलीला मैदान के अन्दर गिरफ्तारी देने के लिए पुलिस से आग्रह किया था?

इस बात के हमारे पास पूरे सुबूत हैं कि यदि स्वामी जी रात को रामलीला मैदान में मिल जाते तो पुलिस उनको जिन्दा नहीं बल्कि मुर्दा अवस्था में ही गिरफ्तार दिखाती अथवा उनका पता ही नहीं लगने देती और उनको मारकर गायब कर देती।

प्रमाण नं० 1 : पुलिस ने एक फर्जी ई-मेल तैयार करके पहले से ही मीडिया को दे दी थी कि स्वामी जी को आतंकवादियों से खतरा है। स्वामी जी को नुकसान पहुँचाने के बाद भ्रष्टाचारी लोग यह मनघड़न्त कहानी कहते कि 'आतंकवादी रात को पंडाल में घुस आये थे और उन्होंने स्वाजी की हत्या कर दी। पूरा ई-मेल हम प्रकाशित कर रहे हैं, ये बहुत ही गम्भीर व संगीन मामला है।' स्वामी जी पूरे देश में लाखों किलोमीटर घूमते हैं तो स्वामी जी पर कोई आतंकवादी हमले की सम्भावना नहीं होती, यह दिल्ली में ही आतंकवादी कहाँ से आ गए थे?

प्रमाण नं० 2 : रामलीला मैदान में रात के घनघौर अंधेरे में दुनिया के इतिहास में पहली बार सोते हुए निर्दोष, निहत्थे, अहिंसक, सत्याग्रही, योगी, देशभक्त भाई-बहनों पर हमला करने का क्या उद्देश्य था? रात के अंधेरे में लोगों पर क्रूर अत्याचार करके उनको भगा दो, जिससे वह आगे से कोई आन्दोलन करने का साहस ही न कर सकें। स्वामी जी ने रात को लाखों की भीड़ से शान्ति बनाये रखने तथा अनुशासित रहने की बार-बार अपील की, स्वामी जी ने तीन बार मंच से पुलिस को गिरफ्तार करने के लिए आह्वान किया लेकिन पुलिस तो स्वामी जी को सदा के लिए मिटाने व देशभक्त लोगों को बर्बरता के साथ रामलीला मैदान से हटाने के लिए आई थी। यहाँ बहुत ही गम्भीर व संगीन बात यह है कि रात के अंधेरे का फायदा उठाकर, भगदड़ मचाकर स्वामी जी की अवैध हथियारों से अंधेरे में ही हत्या कर दें और बाद में कह दें कि भगदड़ में किसने स्वामी जी को मारा हमें नहीं पता अथवा बाबा जी को मारने का आरोप बाबा जी के लोगों पर ही लगा दो अथवा किसी मजहब या किसी अन्य संगठन के लोगों पर यह आरोप लगा दो।

प्रमाण नं० 3 : रामलीला मैदान में जब स्वामी जी कहीं भी नहीं दिखाई दिये तो पुलिस को लगा कि स्वामी जी मंच के आस-पास या मंच के नीचे ही कहीं हैं तो मंच को ही सुनियोजित तरीके से आग लगा दी और मंच व पंडाल को लाक्षागृह की तरह जलाकर वहीं स्वामी जी को जलाने का घिनौना षड्यन्त्र रचा।

प्रमाण नं० 4 : 4 जून की रात से अब तक मिले वरिष्ठ पुलिस अधिकारी व गृहमन्त्रालय में सेवारत देशभक्त अधिकारियों के अनुसार सादी वर्दी में आए कुछ पुलिसवालों को यह स्पष्ट निर्देश था कि बाबा का नामोनिशां नहीं मिलना चाहिए। आप कहेंगे कि ऐसा कैसे हो सकता है? हमारा स्पष्ट उत्तर है कि जब बिना किसी दोष के रात के 12-1 बजे ये आजाद भारत के रामलीला मैदान में जलियाँवाला काण्ड जैसा पाप कर सकते हैं तो स्वामी जी तो आज, जो इस कालेधन से लाभांवित हो रहे हैं, उन सबको अपने सबसे बड़े शत्रु दिखाई देते हैं। जिन देशों ने विदेशी कर्ज के रुप में यह कालाधन लिया हुआ है व उसके साथ-साथ विदेशी कम्पनियाँ जिनका स्वामी जी के स्वदेशी के प्रचार से हजारों करोड़ रुपये का नुकसान हुआ, वे तमाम षड्यन्त्रकारी ताकतें स्वामी जी को एक क्षण भी जिन्दा नहीं देखना चाहती, ये सब अत्याचारी पापी सरकार के साथ मिलकर साजिश रच चुके थे। क्रूर, भ्रष्टाचारी ताकतें जब साजिश करके लालबहादुर शास्त्री जी जैसे प्रधानमंत्री (जो अब तक के सबसे ईमानदार प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने किसी का बुरा नहीं किया) तथा नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आदि को मरवा या गायब करवा सकती हैं तो स्वामी जी के साथ भी ऐसा क्यों नहीं कर सकती? स्वामी जी की हत्या होने के बाद बस एक जाँच आयोग गठित हो जाता। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की मृत्यु की जाँच करने के लिए भी तीन जाँच आयोग बन चुके, लेकिन 65 वर्ष बाद भी किसी जाँच आयोग से कोई परिणाम नहीं निकला। रामलीला मैदान में भी एक महान् सन्यासी को देश सदा-सदा के लिए खो देता और स्वामी जी का विकल्प क्या पता सदियों के बाद ही भारत को मिलता! लेकिन ईश्वर की कृपा से स्वामी जी आज हमारे बीच में हैं इसलिए जो हमें करना है वह सब कुछ हम कर लेगें, लेकिन यदि पूज्य स्वामी जी हमारे बीच में न होते तो सिवाय आँसू बहाने, पछताने व इन दुष्टों को कोसने के अलावा हमारे पास कुछ भी नहीं बचता। हम अपना सब कुछ खोकर भी जी लेंगे परन्तु हम किसी भी कीमत पर स्वामी जी को नहीं खोना चाहते। श्रद्धेय स्वामी जी महाराज जिन्होंने करोड़ों लोगों का कल्याण किया है तथा भारत का यश पूरे विश्व में फैलाया है ऐसे महापुरुष युगों-युगों के बाद ही धरती पर पैदा होते हैं।

इन पापी क्रूर लोगों के हाथों मरना बहादुरी का काम नहीं था। अत: स्वामी जी ने छत्रपति शिवाजी, महायोद्धा धनुर्धारी अर्जुन व योगी भगवान् शिव आदि की तरह राष्ट्ररक्षा हेतु स्वयं की रक्षा की है। इस पूरे षड्यन्त्र को न समझने के कारण कुछ लोगों के मन में यदि कुछ भ्रान्तियाँ होंगी तो वे अवश्य दूर होंगी और वे इस पापी सरकार के पाप का समय पर जरूर जवाब देंगे।

23. **ये इतना बड़ा पाप इन्होने क्यों किया? –** इन भ्रष्ट, बेईमान, असुरों के जीवन का एकमात्र लक्ष्य सत्ता व सम्पत्ति है। इस आन्दोलन से इन दोनों पर ही जब इनको खतरा नजर आने लगा और इनको लगा कि कालेधन को राष्ट्रीय सम्पत्ति व राष्ट्रद्रोह का अपराध घोषित करने से भ्रष्टाचारियों के धन व जीवन दोनों ही समाप्त हो जायेंगे तो इन्होंने एक राष्ट्रभक्त पवित्र संत को समाप्त करने का षड्यन्त्र रच दिया। **एक तरफ देश के कुछ गद्दार व बेईमान लोग जिन्होंने देश को बेरहमी से लूटा है, उनके साथ लगे ड्रग माफिया, विदेशी कम्पनियाँ तथा साथ ही वो देश जहाँ इन भ्रष्ट लोगों का काला पैसा जमा है तथा दुनियाँ के वे लोग, जिनको एक संन्यासी व भारतीय संस्कृति की विश्व पटल पर गौरवमयी प्रतिष्ठा रास नहीं आती ऐसी तमाम आसुरी शक्तियाँ एक षड्यन्त्र के तहत संन्यास व संस्कृति के गौरवमय पुरुष व इस पवित्र आन्दोलन को बदनाम करने की नापाक कोशिश कर रही हैं। क्या इसलिए कि संन्यासी एक आम किसान परिवार में अनपढ़ माँ-बाप के यहां साधारण से घर में पैदा हुआ? क्या एक आम आदमी व योगी संन्यासी को सच कहने की इजाजत नहीं है?**

परम पूज्य स्वामी जी महाराज के भारत स्वाभिमान पर प्रतिदिन नये-नये विचार जानने, आर्थिक आजादी से व्यवस्था परिवर्तन, योग संदेश, जीवन-दर्शन, व्यवस्था-परिवर्तन, अग्नि-पत्र पढ़ने के लिए देखें हमारी हिन्दी वेबसाइट www.bharatswabhimantrust.org
अभियान से जुड़ने व नई जानकारी प्राप्त करने के लिए 02233081122 पर मिस कॉल करें।

राष्ट्र-निर्माण के इस यज्ञ को आगे बढ़ाने के लिये इस पत्रक को राष्ट्रभाषा व अन्य भारतीय भाषाओं में छपवाकर दानस्वरूप गाँव-गाँव व घर-घर वितरित करें तथा वितरक के रूप में आप अपना या अपने संस्थान का नाम प्रकाशित कर सकते हैं।

परम् पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज एवं श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी महाराज का **'योग व आयुर्वेद'** पर विशेष कार्यक्रम प्रतिदिन प्रात: 5 से 8 व सायंकाल 8.00 से 9.30 तक आस्था चैनल पर, 9 से 10 संस्कार चैनल तथा राष्ट्रीय चैनल (डी०डी०-1, दूरदर्शन) पर प्रात: 6.30 से 7.30 बजे तक अवश्य देखें। इसके अतिरिक्त श्रद्धेय आचार्य प्रद्युम्न जी महाराज का **'वेद, दर्शन, गीता व उपनिषद्'** पर आधारित कार्यक्रम प्रात: 4.00 बजे से 5.30 बजे तक संस्कार चैनल पर देखें।

निवेदक : भारत स्वाभिमान एवं पतंजलि योग समिति, सम्पर्क सूत्र : .....
सौजन्य से : .....

केन्द्रीय कार्यालय : भारत स्वाभिमान, पतंजलि योगपीठ-द्वितीय चरण, महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग, निकट बहादराबाद, हरिद्वार-249405 (उत्तराखण्ड)
Tel. : 01334-240008, E-mail : info@bharatswabhimantrust.org / divyayoga@rediffmail.com Website : www.bharatswabhimantrust.org / www.divyayoga.com